July-2021 ISSUE-II(I), VOLUME-X

Published Special issue
With ISSN 2394-8426 International Impact Factor 6.222
Peer Reviewed Journal

Published On Date 31.07.2021

Issue Online Available At :http://gurukuljournal.com/

Organized &
Published By

Chief Editor,
Gurukul International Multidisciplinary Research Journal
Mo. +919273759904 Email: chiefeditor@gurukuljournal.com
Website : http://gurukuljournal.com/

INDEX

Paper No.	Title	Author Name	Page No.
1	उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत दिध्यार्थियो के पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उनके आकांक्षा स्तर का अध्ययन	डॉ.सविता सालोमन & सुश्री सुरेखा अवस्थी	3-10
2	Study the effect of increased screen time on mental health of class 7th students of Raipur (C.G.) in COVID-19	Chandni Khyalia and Prachi Bhatt	11-15
3	कोरोना महामारी के दौरान संचार माध्यमों की उभरती हुई भूमिका का अध्ययन	Meenakshi Darsena	16-23
4	उदगीर तालुक्याच्या विकासात कौशल्य विकास कार्यक्रमाचे योगदान, एक चिकित्सक अभ्यास	शितल नरसिंग पुरी & प्रो. डॉ. एम.डी. कच्छवे	24-27

उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उनके आकांक्षा स्तर का अध्ययन

डॉ. सविता सालोमन सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय) प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालानी, रायपुर (छ.ग.)
सुश्री सुरेखा अवस्थी एम.एड. (प्रशिक्षार्थी)

सारांश

''आकांक्षा स्तर पर व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रभाव पड़ता है। कुछ व्यक्तियों में उच्च कोटि की आकांक्षायें और कुछ में यह निम्न कोटि की भी पायी जाती है।''इस प्रकार स्पष्ट है कि आकांक्षा स्तर व्यक्ति द्वारा किसी कार्य में भविष्य के स्तर की उसी कार्य के पिछले स्तर के ज्ञान पर प्राप्ति की स्पष्ट घोषणा है। प्रविधि के अर्न्तगत वे समस्त विधियां व तरीके आते है जिनका प्रयोग आंकड़े संग्रह हेतु किया जाता है। अनुसंधान की प्रकृति के अनुसार विधियों या प्रविधि का चयन किया जाता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के रायपुर जिले के 05 विद्यालयों में अध्ययनरत प्रत्येक विद्यालय से 50 छात्र एवं 50 छात्राएं कुल 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रुप में किया गया है। अनुसंधान कार्य में आंकड़ों का विश्लेषण एक वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुंचता है तथा परिकल्पना के परीक्षण में सहायक होता है। विश्लेषण के अर्न्तगत प्राप्त मूल आंकड़ों द्वारा आवृत्ति, विचलन, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं सह – सम्बन्ध ज्ञात किया जाता है। परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में अन्तर व्याप्त है। छात्र एवं छात्राओं के कुल आकांक्षा स्तर के मध्यमान में अन्तर सार्थक है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में अन्तर व्याप्त है।

1. प्रस्तावना :–

शिक्षा मानव के विकास हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला सबसे प्रमुख साधन है। जिसके माध्यम से व्यक्ति के समस्त पक्षों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता हैं। शिक्षा एक अखण्ड तत्व है। शिक्षा का वास्तविक और मूल कार्य मनुष्य का आंतरिक व चरित्रात्मक रूप से नवनिर्माण करना हैं, जो व्यक्ति समाज एवं पर्यावरण तीनों का सामंजस्य कर मानव को सत्यं–शिवम्–सुन्दरम् की ओर ले जा सके।

प्रजनन या जैविक इकाई के रूप में एक परिवार वह समूह है जिसमें स्त्री व पुरूष को यौन सम्बन्धों की स्थापना व सन्तान पैदा करने के लिए समाज की स्वीकृति प्राप्त होती है। सामाजिक इकाई के रूप में परिवार स्त्री–पुरूष का एक समूह है जो विवाह सम्बन्धों से या रक्त सम्बन्धों से या गोद लेने से बंधा होता है तथा जो आयु, लिंग व अन्य सम्बन्धों पर आधारित भूमिकाओं को अदा करता है और सामाजिक दृष्टि से एक घर या उप–घर के रूप में पहचाना जाता परिवार सामाजिक संगठन की आधारभूत इकाई है। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है, इसलिये परिवार को समस्त मानवीय समूहों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

मैलिनोवस्की के अनुसार –

"परिवार" ही एक ऐसा समूह है जिसे मनुष्य पशु अवस्था से अपने साथ लाया है।"

मेकाइवर एवं पेज के अनुसार –

"परिवार पर्याप्त यौन संबध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन–पालन की व्यवस्था करता हैं।"

"परिवार व्यक्तियों का ऐसा समूह है जो विवाह, रक्त अथवा गोद के सम्बन्धों पर आधारित होता है यह समूह एक गृहस्थी का निर्माण करता है जिसके अंतर्गत परिवार के सदस्यगण, पति, पत्नी, माता, पिता,

भाई, बहन की विभिन्न भूमिकाएं निभातें हुए एक – दूसरे से अंतः क्रिया करते है, एक दूसरे से भावों और विचारों का आदान प्रदान करतें हैं और इस प्रकार परिवार के लिए एक संस्कृति का निर्माण करतें हैं।

श्यामाचरण दुबे के अनुसार :–

"परिवार में स्त्री और पुरूष दोनों को सदस्यता प्राप्त होती है, उनमें से कम–से–कम दो विपरीत यौन व्यक्तियों के यौन–सम्बन्धों की सामाजिक स्वीकृति रहती है और उनके संसर्ग से उत्पन्न सन्तान मिलकर परिवार का निर्माण करते हैं।"

मानव जन्म से मृत्यु तक परिवार मे ही रहता है तथा अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, परिवार मानव की स्थायी, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। परिवार सांस्कृतिक स्थानांतरण का महत्वपूर्ण बिन्दु है क्योंकि परिवार अपने सदस्यों का समाजीकरण करता है जिसमें परिवार अपने सदस्यों को समाज के मूल्य, मानदण्ड़, रीति रिवाज सिखाता है यही प्रक्रिया पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। इस प्रकार परिवार समाजीकरण के माध्यम से संस्कृति का वाहक है।

आकांक्षा स्तर का अर्थ व परिभाषा :–

आकांक्षा का तात्पर्य व्यक्ति द्वारा लक्ष्य को निर्धारित करके उसे प्राप्त करने की तत्कालीन क्षमता से है। आकांक्षा स्तर को ज्ञानात्मक प्रेरणा भी कहा जाता है, व्यक्ति अपने कार्य करने से पहले का अनुमापन तथा कार्य करने के बाद की उपलब्धि स्तर को सफलता–असफलता के अनुभव के आधार पर लक्ष्य का निर्धारण करता है, क्योंकि व्यक्ति जो भी कार्य करता है वह किसी न किसी उद्देश्य या आकांक्षा से अवश्य सम्बन्धित होता है। जब आकांक्षायें आदर्श स्थिति से उच्च होती हैं तभी व्यक्ति प्रगति का प्रयास करता है।

हापी (1930) तथा डेम्बो (1931) के अनुसार –

''आकांक्षा स्तर पर व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रभाव पड़ता है। कुछ व्यक्तियों में उच्च कोटि की आकांक्षायें और कुछ में यह निम्न कोटि की भी पायी जाती है।''इस प्रकार स्पष्ट है कि आकांक्षा स्तर व्यक्ति द्वारा किसी कार्य में भविष्य के स्तर की उसी कार्य के पिछले स्तर के ज्ञान पर प्राप्ति की स्पष्ट घोषणा है।

ड्रेवर 2 के अनुसारः– आकांक्षा स्तर ही मनुष्य को जीवन स्तर में सतत् प्रयास के लिये प्रेरित करती है। आकांक्षा स्तर के कारण ही आज मनुष्य जंगली एवं असभ्य जीवन को त्यागकर सुसभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण कर सका है। अपनी आकांक्षा के कारण ही आज मनुष्य समस्त जीवधारी प्राणियों का सिरमौर बन सका है।

2. समस्या का महत्व :–

शैक्षिक अनुसंधान का शिक्षा प्रक्रिया में आवश्यक सुधार एवं विकास के लिए विशेष महत्व है। शिक्षा का मुख्य ध्येय जीवन में सुधार लाना तथा विद्यार्थियों का सर्वागीणं विकास करना है।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में व्यापक परिवर्तन हुआ है। इन परिवर्तनों का अध्ययन तथा त्रुटियों के निवारण के द्वारा जागृत की जा सकेगी और पारिवारिक वातावरण के माध्यम से विद्यार्थियो के आकांक्षा स्तर में वृद्धि की जा सकेगी तथा प्रगति पथ की ओर अग्रसर होंगे। छात्र और छात्राओं दोनों वर्गो को ऐसा आदर्श पारिवारिक वातावरण उन्हें उपलब्ध कराये जो उनके आकांक्षा स्तर में सकारात्मक प्रभाव डाल सके।

अतः आकांक्षा स्तर पर पारिवारिक वातावरण के पड़ने वाले प्रभाव के संबंध के अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त होगा वह शिक्षा के क्षेत्र के विकास में निश्चित रुप से लाभदायक सिद्ध होगा।

3. संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

3.1 भारत में किए गये शोध अध्ययन :–

1. **सिन्हा, वी. (2014)** ने परिवारों के वातावरण का बच्चों के व्यवहार एवं उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु इन्होंने 7 से 17 वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले 300 बच्चों को न्यादर्श में सम्मिलित किया। इन्होंने आँकड़ों को एकत्र करने हेतु स्वानिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया। प्राप्त निष्कर्षो से ज्ञात हुआ है कि परिवार के वातावरण के साथ–साथ बच्चों की लालन–पालन विधि एवं अभिभावक तथा बच्चों के मध्य सम्बन्ध का बच्चों उपलब्धियों पर पड़ता है।
2. ***Mehrotra, K. K. (2013)*** ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के गृह वातावरण व संवेगात्मक दक्षता का अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु इन्होंने 564 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में सम्मिलित किया, जिनमें 329 छात्र व 235 छात्रायें थी। आँकड़ों को एकत्र करने के लिये इन्होंने डॉ. के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित गृह वातावरण मापनी तथा आर. एल. भारद्वाज एवं एच. सी. शर्मा द्वारा निर्मित संवेगात्मक दक्षता मापनी का उपयोग किया। इन्होंने अध्ययन के निष्कर्षो में पाया कि गृह वातावरण विद्यार्थियों के संवेगात्मक दक्षता को प्रभावित करता है।

आकांक्षा स्तर से संबंधित किए गए शोध अध्ययन :–

1. **सैनी, धनवीर (2007)** ने ''उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य कर निष्कर्ष में पाया कि छात्र व छात्राओं में क्रोध के साथ शैक्षिक उपलब्धि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य किसी प्रकार का सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया। उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. **शर्मा, राजेश (2003)** – ''विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन के विकास में उनके आकांक्षा स्तर की भूमिका'' पीएच.डी. स्तर पर शोध कार्य किया। जिसमें न्यादर्श हेतु जबलपुर शहर के विद्यालय के उच्च एवं निम्न आकांक्षा स्तर के 200 छात्र तथा छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। उच्च आकांक्षा स्तर और निम्न आकांक्षा स्तर दो भागों में दो समूहों का गठन किया गया। निष्कर्ष में पाया कि– आकांक्षा स्तर के छात्रों के शैक्षिक निष्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जबकि छात्र तथा छात्राओं के समूह के आकांक्षा स्तर का उनके शैक्षिक निष्पादन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। निम्न आकांक्षा स्तर समूह का शैक्षिक निष्पादन उच्च आकांक्षा स्तर समूह की अपेक्षाकृत अधिक है।

3.2 विदेशों में किये गये शोध अध्ययन :–

1. ***Sacks, V. et al. (2014)*** ने पारिवारिक वातावरण और किशोरों की भलाई का अध्ययन किया और इन्होंने अपने अध्ययन से 12 से 17 वर्ष तक बच्चों को सम्मिलित किया, इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि 65% किशोर अपने माता–पिता से बहुत अच्छी तरह से संवाद कर सकते है, 50% से कम किशोर अपने परिवार के साथ एक साथ रात का भोजन करते है, 10% कक्षा 10 के छात्रों के माता–पिता को पता नही है कि वे विद्यालय के बाद क्या कर रहे है, संयुक्त अभिभावक में 50% व एकाकी अभिभावक 40% सप्ताह में एक बार ही सख्ती से व्यायाम करते है और ज्यादातर किशोर अपने परिवार के साथ मिलकर काफी अच्छी तरह से रह रहे है।
2. **कोरिट, डी.के. तथा कियकेमोबी, एफ. (2014)** ने छात्रों की शैक्षणिक प्रदर्शन पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का मूल्यांकन किया। यह शोध कार्य केन्या में किया गया। यह अध्याय बान्डूरा सामाजिक अध्ययन के सिद्धांत पर आधारित था। निष्कर्ष निकाला कि पारिवारिक पृष्ठभूमि छात्रो के शैक्षणिक

प्रदर्शन को प्रभावित करती है तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि के अच्छा होने पर छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन भी अच्छा हो सकता है।

आकांक्षा स्तर से संबंधित किए गए शोध अध्ययन :–

1. **बोहोन एवं अन्य (2006)** ने अपने अध्ययन में पाया कि मैकिसकन्स एण्ड प्यूरेटोरिकन्स, श्वेत, और अश्वेत की तुलना में शैक्षिक आकांक्षा और आशा मे ंनिम्न पाये गय। क्यूबियन किशोर, श्वेत, अश्वेत और लैटिनो की तुलना में उच्च आकांक्षी और आशावादी पाये गये।
2. **जेनियार्टो (2004)** ने इण्डोनेशिया की सैमरंग विश्वविद्यालय के छात्रो की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया एवं पाया कि माता पिता की सामाजिक आर्थिक स्थिति का विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

4. समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अन्तर्गत **"उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उनके आकांक्षा स्तर का अध्ययन"** किया गया है।

5. अध्ययन का उद्देश्य –

1. उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

6. परिकल्पना

1. उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
2. उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

7. प्रकार्यात्मक परिभाषा :–

- **उच्चतर माध्यमिक स्तर –** प्रस्तुत लघु षोध अध्ययन में कक्षा 11 वीं एवं कक्षा 12 वीं तक का विद्यालय उच्चतर माध्यमिक स्तर का कहा गया है।
- **पारिवारिक वातावरण –** प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य पारिवार की परिस्थितियाँ तथा सामाजिक वातावरण से है जिसके अर्न्तगत परिवार में अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध, सदस्यों के व्यक्तिगत विकास तथा परिवार की व्यवस्था बनाये रखना सम्मिलित है।
- **आकांक्षा स्तर –** आकांक्षा स्तर का तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने लक्ष्य को निर्धारित करके उसे प्राप्त करने की तत्कालीन क्षमता से है। अर्थात् मूल्य या लक्ष्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा ही आकांक्षा स्तर कहलाती है।

8. अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमा :–

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ती ने परिसीमा का निर्धारण इस प्रकार किया है :–

(1) प्रस्तुत शोध के लिए रायपुर जिले का चयन किया जायेगा।
(2) प्रस्तुत अध्ययन में रायपुर जिले के शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
(3) प्रस्तुत अध्ययन के लिए उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
(4) प्रस्तुत अध्ययन में छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।
(5) चयनित विद्यार्थियों में 50 छात्र एवं 50 छात्राएं कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

9. समस्या का चर :–

एक चर वैज्ञानिक अध्ययन में ऐसी स्थिति होती है, जिसमें मात्रात्मक व गुणात्मक परिवर्तन हो सकता है।

- **स्वतंत्र चर**–पारिवारिक वातावरण
- **परतंत्र चर**– आकांक्षा स्तर

10. शोध विधि

प्रविधि के अर्न्तगत वे समस्त विधियां व तरीके आते है जिनका प्रयोग आंकड़े संग्रह हेतु किया जाता है। अनुसंधान की प्रकृति के अनुसार विधियों या प्रविधि का चयन किया जाता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

11. जनसंख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने रायपुर जिले के 05 विद्यालयों में से अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के रायपुर जिले के 05 विद्यालयों में अध्ययनरत प्रत्येक विद्यालय से 50 छात्र एवं 50 छात्राएं कुल 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रुप में किया गया है।

13. उपकरण :–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में पारिवारिक वातावरण ज्ञात करने हेतु हरप्रीत भाटीया और एन. के. चड्डा द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण मापनी एवं आकांक्षा स्तर ज्ञात करने हेतु डॉ. महेश भार्गव एवं डॉ. एम. ए. शाह द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत आकांक्षा स्तर का मापनी का प्रयोग किया गया है।

14. सांख्यिकीय विश्लेषण :–

अनुसंधान कार्य में आंकड़ों का विश्लेषण एक वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुंचता है तथा परिकल्पना के परीक्षण में सहायक होता है। विश्लेषण के अर्न्तगत प्राप्त मूल आंकड़ों द्वारा आवृत्ति, विचलन, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं सह – सम्बन्ध ज्ञात किया जाता है।

15 परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम :–

परिकल्पना सम्बन्धित समस्या के समाधान का एक सम्भावित प्रस्ताव होता है। वह परिकल्पना अधिक उपयुक्त रहती है, जिसकी पुष्टि तथा अस्वीकृति की प्रसम्भात्यता लगभग 50–50 प्रतिशत होती है। परिकल्पना के शोध के निष्कर्षों के प्रतिपादन में सहायता मिलती है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध **"उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उनके आकांक्षा स्तर का अध्ययन"** के उद्देश्य की पूर्ति हेतु परिकल्पनाओं की पुष्टि की गई है, जिसे निम्न प्रकार तालिका के द्वारा स्पष्टीकरण किया गया है –

परिकल्पना –(1) उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

सारणी कमांक – 4.1

पारिवारिक वातावरण मापनी पर छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान, मानक विचलन, तथा ष्ट्र मान

पारिवारिक वातावरण आयाम	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	कांतिक अनुपात	.05 सार्थकता स्तर, df=498 पर निष्कर्ष
छात्र	50	185.6	17.5	1.06	सार्थक नहीं
छात्राएं	50	189.4	18.2		

***0.**05 सार्थकता स्तर पर **'CR'** का सारणी मान = 1.96

विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका संख्या – 4.1 में पारिवारिक वातावरण मापनी पर प्राप्त 50 छात्र एवं 50 छात्राओं के प्रदत्तों का कुल पारिवारिक वातावरण का मध्यमान क्रमशः 185.6 व 189.4, मानक विचलन क्रमशः 17.5 व 18.2 तथा प्राप्त 'CR' का मान 1.06 है, प्राप्त 'CR' का मान स्वतन्त्रता के स्तर df = 498 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान = 1.96 से कम है, अतः यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–1 में पारिवारिक वातावरण की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है, यह परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में अन्तर व्याप्त है।

विवेचना :–

उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि छात्रों का पारिवारिक वातावरण छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की तुलना में अच्छा है। इसके मुख्य कारण छात्रों के परिवारों का छात्राओं के परिवारों की तुलना में अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध व व्यक्तिगत अभिवृद्धि अधिक अच्छा होना इत्यादि रहे है।

परिकल्पना –(2) उच्चतर माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

सारणी कमांक – 4.2

आकांक्षा स्तर मापनी पर छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान, मानक विचलन, तथा 'CR' मान

आकांक्षा स्तर आयाम	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	कांतिक अनुपात	.05 सार्थकता स्तर, df=498 पर निष्कर्ष
छात्र	50	168.4	16	0.058	सार्थक नहीं
छात्राएं	50	168.6	18.4		

***0.**05 सार्थकता स्तर पर 'CR' का सारणी मान = 1.96

विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका संख्या – 4.02 में आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्त 50 छात्र एवं 50 छात्राओं के प्रदत्तों का कुल आकांक्षा स्तर का मध्यमान क्रमशः 168.4 व 168.6 है, मानक विचलन क्रमशः 16 व 18.4 तथा 'CR' का मान 0.058 है, प्राप्त 'CR' का मान स्वतन्त्रता के स्तर df = 498 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान = 1.96 से कम है, अतः यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–2 में आकांक्षा स्तर की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है, यह परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के कुल आकांक्षा स्तर के मध्यमान में अन्तर सार्थक है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में अन्तर व्याप्त है।

विवेचना :–

उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर असमान है जिसका प्रमुख कारण छात्र एवं छात्राओं को मिलने वाला विद्यालयी, पारिवारिक वातावरण, तथा परिस्थितियां असमान है।

16. निष्कर्ष :–

4.5.1 प्रतिपादित परिकल्पना–1 में पारिवारिक वातावरण की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है, यह परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में अन्तर व्याप्त है।

4.5.2 प्रतिपादित परिकल्पना–2 में आकांक्षा स्तर की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है, यह परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के कुल आकांक्षा स्तर के मध्यमान में अन्तर सार्थक है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में अन्तर व्याप्त है।

17. शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना था, प्राप्त परिणाम स्पष्ट रूप से इंगित करते है कि छात्रों के लिये पारिवारिक वातावरण छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की तुलना में बेहतर है, इससे प्रतीत होता है कि परिवार के सदस्य बालिकाओं की तुलना में बालकों के प्रति अधिक सकारात्मक एवं सहयोगात्मक व्यवहार करते है तथा छात्रों का आकांक्षा स्तर छात्राओं की तुलना में अधिक उच्च पाया गया।

परिणामों में पारिवारिक वातावरण का आकांक्षा स्तर पर सकारात्मक प्रभाव भी परिलक्षित होता है जो यह इंगित करता है कि अच्छा आकांक्षा स्तर के लिये अच्छा पारिवारिक वातावरण का होना अति आवश्यक है।

18. सुझाव :–

1. अभिभावकों को बच्चों के लिये पारिवारिक वातावरण की भूमिका को समझ उनके अनुरूप परिवार का वातावरण बनाना चाहिये।
2. अभिभावकों को विद्यार्थियों के साथ अच्छे अंर्तवैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये।
3. विद्यार्थियों को अपने परिवार के सदस्यों साथ अपनें अंर्तवैयक्तिक संबंध को मजबूत करना चाहिये।
4. विद्यार्थियों को परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर व स्वयं अपनी व्यक्तिगत अभिवृद्वि हेतु प्रयास करना चाहिये।
5. शैक्षिक रूचि व मानसिक स्वास्थ्य व पारिवारिक वातावरण के मध्य संबंध महत्व के संदर्भ में अभिभावकों व छात्रों को जागरूक करना चाहिये।

19. भावी अनुसंधान हेतु विभिन्न परिप्रेक्ष्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में भावी अनुसंधान हेतु निम्नांकित सुझाव अपेक्षित हैं–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल एक ही जिले के विद्यार्थियों पर किया गया है। यह शोध अध्ययन अन्य जिले एवं राज्यों के विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। यह शोध अध्ययन अन्य स्तरों (प्राथमिक, उच्च माध्यमिक, इत्यादि) के विद्याथियों को लेकर किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक रूचि व मानसिक स्वास्थ्य में से चर विशिष्ट के साथ गुणात्मक, मात्रात्मक एवं मिश्र–उपागम अध्ययन किये जा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, एम., एवं वर्मा, के. बी. (2008). व्यक्तित्व मनोविज्ञान. दिल्ली रू मोतीलाल बनारसीदास.
2. आलम, एम. (2012). कक्षा आठ में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव, मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक अभिरूचि के प्रभाव का अध्ययन. पी.एच.डी. शिक्षाशास्त्र, एम.जे.पी.आर. विश्वविद्यालय बरेली.

3. दीप्ति, पी. (2000). विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बौद्धिक स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि तथा विद्यालयी अभिवृत्ति का अध्ययन. पी.एच0 डी0–शिक्षाशास्त्र, सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय, कानपुर.
4. पाण्डेय, एम. (छक). शिक्षाशास्त्री बी0एड0 प्रवेश परीक्षा. आगरा : उपकार प्रकाशन.
5. पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा रू अग्रवाल पब्लिकेशन.
6. पारीक, एम. (2009). बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध. जयपुरः रिसर्च पब्लिकेशन्स
7. बिहारी, आर. एल., एवं मानव, आर. एन., (2004–05). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ रू रस्तोगी पब्लिकेशन
8. भार्गव, टी. (2000). मानव व्यवहार का मनोविज्ञान. आगरा रू भार्गव पुस्तक प्रकाशन.

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 6.222
Peer Reviewed Journal

ISSN No. 2394-8426
July-2021
Issue–II(I), Volume–X

Study the effect of increased screen time on mental health of class 7th students of Raipur (C.G.) in COVID-19

*Chandni Khyalia and **Prachi Bhatt
Department of Education, Pragati College, Raipur, Chattisgarh
email.id-ckhyalia@gmail.com

Abstract

Screen time is the total time spent per day in viewing screens such as mobile phone, TV, computer, tablet, or any hand-held or visual device. Screens have become an essential part of our life. Use of screens while engaging in gaming, accessing social media, and watching online streaming services can be associated with behavioural addictions such as gaming disorder. This study examined the effect of increased screen time on mental health of class 7th students during covid-19 pandemic. Class 7th students (N=120) were surveyed by simple random sampling method. Self made questionnaire tool was used for data collection.

Keywords: increased screen time, mental health, physical health, covid-19, class 7 students

Introduction

Screen time is the total time spent per day in viewing screens such as mobile phone, TV, computer, tablet, or any hand-held or visual device. Parents, teachers, and health professionals are concerned about the increase in children's screen time. Screen time spent for educational or social activities such as schoolwork, interacting with friends and relatives, and creating art or music or relaxation is termed positive or healthy, while watching inappropriate TV shows, visiting unsafe websites, or playing video games. There are multiple ill effects of excessive screen time on child: Mental health effects include delayed speech, hyperactivity, aggression, violence, desire for instant gratification, poor concentration, FOMO (fear of missing out), FOBLO (fear of being left out), cyber-bullying, media addiction, distorted perception of sex by exposure to pornography, drug use, self-harm, anxiety, and depression. Unhealthy use of media can lead to addiction. Internet gaming addiction is a mental disorder. If your child compulsively uses media, craves for it, has lost control over its usage, gets violent when asked to stop its use, and continues to use despite adverse consequences such as fall in academic performance and loss of friendships, he is probably addicted to it. Media addiction may be associated with other disorders such as attention deficit hyperactivity disorder (ADHD), depression, and anxiety. Media addiction can be treated by consulting mental health professionals. When you find one or more flag signs given above, do consult with your paediatrician or a mental health professional at the earliest.

When screens are used in moderation in a balanced and healthy way, they have many benefits. Interestingly, online social networking has been suggested as a way to connect with peers and relatives during the COVID-19 times by the WHO. A similar sentiment has also been echoed in the recent American Academy of Child and Adolescent Psychiatry position statement on media habits and sedentary screen time during COVID-19 quarantine among children and adolescents. The AAP guidelines also emphasize the importance of content and context of digital media use by children. A recent report prepared by the United Nations Children's Fund

(UNICEF) has highlighted the children's and parents' views about the overall positive role played by the Internet and digital technology for educational purposes and leisure activities by children while acknowledging the concerns or potential risks with its use at the same time. Another report prepared by the UNICEF had pointed out the several gaps and methodological limitations in evidence-based literature supporting the validity and utility of having arbitrary screen-time cut-offs in today's digital world. The bright side of screen time

It's not all bad news when it comes to screens. In a 2019 study, Michigan State researchers found adults who used social media were less likely to experience psychosocial distress, which is a hallmark of major depression and anxiety.

"Using a screen to… keep you connected to people you have built a relationship with as a bridge is a more positive use of screens than just scrolling through Instagram or things that don't enhance your relationships," Saltz says, adding the latter can induce fear of missing out. In other words, it can be beneficial to use Facebook to catch up with a friend from across the world — as long as it's not interfering with making in-person plans with other people. The positive and negative health effects of screen time are influenced by levels and content of exposure. An increase in screen time has been associated with negative cognitive outcomes for the children between 0 and 4. Toddlers with the three hours of T.V. watching per day were three times as likely to experience a language delay, lower scores on school readiness tests i.e. vocabulary, number knowledge, classroom engagement. Children who watched more T.V. were found to have less brain connectivity between language, visual, and cognitive control regions of brain than their peers who watched less T.V.

Brain development:

Children with longer screen time have slower brain development. It hurts skills like imagery, mental control, and self-regulation. This is important because the brain development is very rapid in first five years. During this time, strong connections are formed in brain that lasts for lifetime.

Behavioural impact:

Screen use has been implicated with a slow of behavioural effects in children. With the increasing screen use, child's participation in physical activities decreases.

Some countries have already begun implementing the regulations on screen time to protect their citizen.

In **Taiwan,** there is a legal time limit on how much screen kids can use. If the excessive screen use is found to have negative effect on child's health, parents can be charged fine up to $1595.

In Korea, video game uses among students have been implicated in many psychological and physical issues like high rates of depression. **In Korea,** a **cool down** program has been established that makes video game automatically shut down after two hours of play for 10 minutes. The other law is called "**shut down law**" that bans gaming for children under the age of 16 between midnight and 6 a.m. It is for the sake of children to get proper sleep.

China has also enacted similar restrictions for users of video games 'Honor of Kings' because of its addictive nature. The users of age under 13 can play for one hour per day and 13-

17 years old can play for 2 hours per day. These policies attempt to limit screen time for children in response to research that reveals negative impact of screens on human being.

Adolescents are also more likely than younger children to have their own smart phone, which allows the use of technology in more situations. This may increase the possibility of Internet addiction, excessive gaming, or problematic social media use, which has been linked to low well-being.

So, to study of effect of increased screen time on mental health, class 7th students were taken as sample.

Research problem: Study of effect of increased screen time on mental health of class 7th students of Raipur (C.G.)

The **objective** of the present study is as following:

- To study the relationship between mental health and screen time of class 7th students.

Hypotheses of research: On the basis of objective of the study, the following hypothesis has been formulated:

- Increased screen time will have negative effect on mental health of class 7th students.

Research methodology: In the present study, descriptive survey research method is adopted and employed. The private school students of class 7 of Raipur (C.G.) have been taken as the population. 120 students of class 7th of private schools from Raipur (C.G.) city have been taken as the sample. Simple random sampling method is used. In present study, Dependent variable is mental health of class 7th students. Independent variable is screen time. For the present study, self made questionnaire tool is used. An online Google form for online data collection was administered. Each and every response of online Google form from students is evaluated secretly.

Statistical analysis

The following statistics was used in representing information received for the study in order to describe the characteristic of information of sample by using Mean, standard deviation, Critical Ratio test to test hypotheses.

Verification of hypothesis

- Increased screen time will have negative effect on mental health of class 7th students.

Table No 1:

Effect of increased screen time on mental health of class7th students

Students	Mean	Standard deviation	Score	Count	Variance
Screen time	13.37	3.417	1605	120	11.68
Mental health	1.32	1.217	159	120	1.48

Critical ratio of screen time to mental health is 38.30

For degrees of freedom df= (n1+n2)-2= (120+120)-2=238,

Calculated value of Critical ratio is 0.383 at 0.1 level.

Tabulated value is 3.1 at 0.1 level.

So, calculated value is less than tabulated value, and then directional hypothesis is rejected.

Result: There was be no negative effect of increased screen time on mental health of class 7th students.

Findings:

There was no negative effect of increased screen time on mental health of class7th students. For present study, 120 students of class7 of 12-14 years from CBSE schools were studied. All 120 students use screen daily. 42.2% students use computer daily.93.5% students use mobile phone daily.82.2% students watch TV on daily basis. 28.9% students say they feel anxiety or uneasiness when they are off from screen. 17.8% students feel depressed after or during screen time. 22.7% admitted that they have problem in focus or concentration on work. 38.6% feel irritated and through tantrums when not allowed to use phone. 79.5% play physical games. 52.3% perform yoga or exercise daily. 63.6% play video games on laptop or mobile. 34.1%feel addicted to mobile phone. 31.8%get angry /aggressive/violent if not allowed to watch TV or phone. 14.3% feel problem in interaction with peers and society. 90.9 % have good conduct behaviour. 38.1% have social media accounts. 68.6% use for 2 hours, 22.9% use for 4 hours,5.7% use for 6 hours and 2.9% use for 8 hours computer or laptop daily. 40% use for 2 hours, 30% for 4 hours, 20% for 6 hours and 10% for 8 hours use mobile phone daily. 65.9% for 2 hours, 24.4% for 4 hours, 9.8 % for 8 hours watch TV daily. 13.3% for 2 hours, 73.3% for 4 hours, 13.3% for 6 hours take online classes daily. 77.8% for 2 hours, 13.9% for 4 hours, 2.8% for 6 hours, 5.6% for 8 hours play video games daily. 69% for 2 hours, 21.4 % for 4 hours, 2% for 6 hours, 4.8 % for 8 hours perform physical activities. 87.9% for 2 hours, 3% for 4 hours, 9.1 % for 6 hours use social media. 79.8% for 2 hours, 12.8% for 4 hours, 7.7 % for 6 hours have sports activities daily. 25.6 % for 2 hours, 32.6% for 4 hours, 18.6% for 6 hours and 23.3% for 8 hours use screen daily.

Conclusion:

In present study, it was found that there is no negative effect of increased screen time on mental health of class 7th students. It may be possible due to reason that students may have become habitual of screen. Increase in screen time for online classes and video games, social media interaction and entertainment is of their interest. So it might not bother them and doesn't sound a burden now. It may be for short term but in long-term, excessive use of screen will definitely lead to ill effects on health. It should be a matter of concern. Organizations like WHO and American Academy of Paediatrics, Indian Academy of Paediatrics need to revise the recommendations already given for younger children and formulate the new rules, regulations, recommendations for older children, adolescents and adults regarding the use of screen per day.

References:

1. "American Academy of Paediatrics announces new recommendations for children's media use."(2001) www.aap.org. Paediatrics 2001;107;423,doi:10.1542/peds.107.2.423.
2. Bhatanagar, R.P. (2007). "Reading in Methodology of Research in Education", R. Lall Book Depot, Near Govt. Inter College, Meerut, pg.no.115-125.
3. Asthana Bipin (2010). "Measurement and Evaluation in Psychology& Education", Aggarwal Publications, Agra-2, pg.149-176.

4. Herrick, Kirsten A; Fakhouri, Tala H.I.; Carlson, Susan A; Fulton, Janet E; National Centre for Health Statistics. (U.S.)(2014). "T.V. Watching and Computer use in U.S. youth aged 12-15", 2012. OCLC897600869.
5. Christensen, Matthew A.; Bettencourt, Laura; Kaye, Leannne; Moturu, Sai T.; Nguyen, Kaylin T.; Olgin, Jeffrey E.; Pletcher, Mark J.; Marcus, Gregory M.; Romigi, Andrea (2016). "Direct measurements of Smartphone screen time: Relationships with Demographics and sleep". PLOS ONE. 11(11):e0165331. Bibcde:2016PLOSO.1165331.doi10.1371/jounal.pone.0165331 PMC5102460.PMID27829040.
6. Ilamparithi P, Selvakumar P.(2017) "Association between screen time and behavioural health problems among rural and urban students in early and mid-adolescent age group". J Pediatrics.2017; 4(07):453-460.doi:10.17511/ijpr.2017.07.04.
7. Madhav K.C., Sherchand S.P., Sherchan S.(2017) Association between screen time and depression among US adults. Prev. Med. Rep. 2017;8:67–71. doi: 10.1016/j.pmedr.2017.08.005. - DOI - PMC - PubMed
8. Dubey M.(2018) "Screen based media use and screen time assessment among adolescents residing in an urban resettlement colony in New Delhi, India". Jfmpc2018 Nov-Dec; 7(6):1236-1242.doi10.4103/jfmpc.jfmpc_190_18 PMCID: PMC6293917PMID:30613503.
9. Twenge, J. M., & Campbell, W. K. (2018). Associations between screen time and lower psychological well-being among children and adolescents: Evidence from a population-based study. *Preventive medicine reports*, *12*, 271–283. https://doi.org/10.1016/j.pmedr.2018.10.003
10. Kaur N.; Gupta M.; Malhi P.; Grover S., "Screen time in under-five children". Indian Pediatric. (2019), 56, 773-788, doi: 10. 1007/S13312-019-1638-8.
11. Shah RR.; Fahey NM.; Soni A.V.; Phatak A.G.; Nimbalkar, S.M.; "Screen time usage among preschoolers aged 2-6 in rural Western India: A cross sectional study". Jfmpc.(2019),8,6,1999-2002,doi:10.4103/jfmpc.jfmpc_206_19.
12. Stiglic, Neza; Viner, Russell M (3 January 2019). "Effects of screen time on the health and well being of children and adolescents: a systematic review of reviews." BMJ open 9(1):e023191.doi: 10.1136/bmjopen-2018-023191.PMC6326346PMID30606703.
13. Oberle, Eva & Ji, Xuejun & kerai, & martin, Guhn & Schonert-Reichl, Kimberly & Gadermann,. (2020). Screen time and extracurricular activities as risk and protective factors for mental health in adolescence: A population-level study. Preventive Medicine. 10.1016/j.ypmed.2020.106291.
14. Singh S, Balhara YP. (2021) "Screen-time" for children and adolescents in COVID-19 times: Need to have the contextually informed perspective. Indian J Psychiatry 2021;63:192-5

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 6.222
Peer Reviewed Journal

ISSN No. 2394-8426
July-2021
Issue–II(I), Volume–X

कोरोना महामारी के दौरान संचार माध्यमों की उभरती हुई भूमिका का अध्ययन

Meenakshi Darsena
Research Scholar, Kushabhau Thakre Uiversity of Journalism and Mass Communication, Raipur, C.G.

सारांश

विश्वव्यापी कोरोनावायरस महामारी से बचाव हेत पुरी दुनिया की तरह भारत ने भी लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग को बेहतर विकल्प के रूप में देखा। परिणामस्वरूप, व्यक्तिगत और सामाजिक जरूरत वाली दैनिक गतिविधियों से दुर हूए लोगों का मीडिया उपभोग बढ़ने लगा। लॉकडाउन के पहले सप्ताह में विभिन्न देशों में हुए शोधों ने लॉकडाउन में लोगों की बदली जीवन–शैली, मीडिया उपभोग की आदतों और इन सबके उनके स्वास्थ्य पर पड़े प्रभावों की एक तसवीर समाज के सामने प्रस्तुत की है। प्रस्तुत शोध में मात्रात्मक प्रविधि अपनाते हुए गूगल फॉर्म की मदद से एक ऑनलाइन सर्वेक्षण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्शद्ेय भारत में कोरोना महामारी के दौरान संचार माध्यमों की उभरती हुई भूमिका का अध्ययन करना है। यह शोध एक मात्रात्मक शोध है। शोध हेतु आकंड़े एकत्रित करने के लिए ऑनलाइन सर्वे तकनीक अपनाई गई। यह ऑनलाइन सर्वेक्षण गूगल फॉर्म आधारित सेवा के द्वारा व्हाट्सएप समूह, फेसबुक, मैसेंजर और ई–मेल के माध्यम से छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर व गरियाबंद जिले के 20–20 चयनित प्रयोज्यों को प्रसारित किया गया। प्रयाज्यों का चयन यादृद्विच्छक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। परिणामों से स्पष्ट है कि लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 32.94 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया। लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रश्न पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 2.10 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया। लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 36.19 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

Keywords- कोरोना महामारी, संचार माध्यम

प्रस्तावना

विश्व लम्बे अरसे बाद वायरस जनित एक बड़ी महामारी का सामना कर रहा है। लगभग सौ साल पूर्व एक महामारी के प्रकोप के बाद कोरोना वायरस (कोविड 19) से जनित महामारी से सम्पूर्ण विश्व जूझ रहा है। दुनिया का शायद ही कोई देश होगा जहाँ कोविड 19 का वायरस और सक्रमण नहीं पहुचा है और मौतें नहीं हुई हैं। अधिकांश देशों में इस महामारी से निपटने के लिए लगाए गए लॉकडाउन के कारण आर्थिक गतिविधियों और अर्थव्यवस्था को भारी नकसान पहुचा है।

इसमें कोई संशय नहीं है कि पिछली एक सदी में विज्ञान–तकनीक और चिकित्सा विज्ञान के अभुतपूर्व तरक्की और खोजों के कारण दुनिया ने न सिर्फ धीरे–धीरे कई महामारियों और संक्रामक बीमारियों पर काबू पा लिया है बल्कि कई को जड़ से खत्म करने में कामयाबी हासिल कर ली है। टीकों के अविष्कार और सार्वभौमिक टीकाकरण ने इसमें एक बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। इन वजहों से आज दुनिया कोविड 19 महामारी से निपटने में पहले की तुलना में कहीं ज्यादा सक्षम है। इसके बावजूद वायरसों के परिवार में अनेक वायरस और उनके नए–नए प्रकार काबू से बाहर हैं.। कोविड19 वायरस ने एक बार फिर वैज्ञानिक प्रगति और खोजों की सीमाओं को जाहिर कर दिया.

कोविड 19 महामारी और उसके तीव्र प्रसार ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि महामारियां पूरी तरह से खत्म नहीं हुई हैं और नए–नए वायरस और उनसे पैदा होने वाली महामारियां आने वाले समय में भी मानवता और जन–स्वास्थ्य को चुनौती देते रहेंगे। यही नहीं, कोविड 19 और उसके जन–स्वास्थ्य पर पड़ रहे गंभीर और जानलेवा असर से लेकर उसके कारण पैदा होने वाले सामाजिक–मानसिक तनावों और आर्थिक तबाही ने वैश्विक स्तर पर कई सवालों और बहसों को भी जन्म दिया है। जंगलों की कटाई के कारण मनुष्यों और जंगली जीवों–वायरसों के बीच घटती दूरी, गर्म होती धरती, जलवायु पर परिवर्तन, भमूडंलीकरण खासकर अंतर–संबंधति विश्व के कारण सक्रांमक बीमारियों के तीव्र प्रसार, टीकों और दवाओं के विकास, उनके पेटेंट और वितरण जैसे मुद्दे सार्वजनिक चर्चाओं में हैं।

इसके साथ ही महामारियों के प्रबंधन से लेकर उनसे निपटने में एक बार फिर संचार और मीडिया की अत्यंत् महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित किया जा रहा है। खासकर इस महामारी से निपटने में आमजन की व्यक्तिगत और सामूहिक सतर्कता, सजगता और सावधानियों के मद्नजर लोगों को जागरूक बनाने, उन्हें महामारी से निपटने के लिए मानसिक रूप से तैयार करने और उनके व्यवहार में अनकूल बदलाव लाने में संचार और मीडिया की रणनीतिक भूमिका और महत्त्व पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है।

अध्ययन का महत्व

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ) ने इस महामारी के दौरान सही और तथ्यपूर्ण सूचनाओं के प्रसार को एक बड़ी प्राथमिकता के रूप में चिन्हित किया है। उसने इस महामारी के दौरान झूठी, भ्रामक और आधी–अधूरी सूचनाओं और समाचारों की बाढ़ को "सूचना–महामारी" (इंफोडेमिक) के रूप में चिन्हित करते हुए उसे कोविड 19 से निपटने में सबसे बड़ी चुनौती माना है.। यह सिर्फ नीति–निर्माताओं और स्वास्थ्य प्रबंधकों के लिए ही चुनौती नहीं है बल्कि मीडिया और संचार के विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं के लिए भी एक बड़ी चुनौती है. "सूचना महामारी" पर घटना के उद्भव और प्रसार के पीछे सक्रिय सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक–सांसकृतिक–तकनीकी पृष्ठभूमि, सन्दर्भों, कारणों से लेकर उससे निपटने जैसे अनेकों पहलुओं पर गंभीर शोध और अध्ययन समय की मांग है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

लॉकडाउन अवधि में विभिन्न देशों के अनेक संगठनों और कंपनियों ने शोध किए हैं। इन शोधों से यह निकल कर आया है कि दुनियाभर में इस महामारी ने लोगों के खाने–पीने, सोने एवं जीने के लगभग सभी तौर–तरीकों को बदलने के साथ–साथ मीडियो उपभोग की आदतों में भी काफी बदलाव ला दिया है **(कुमार और द्विवेदी, 2020)**। लंदन की प्राइवेट कंपनी **ग्लोबल वेब इंडेक्स** ने जब अपने आकंड़े जारी किए तो पाया कि यएस और यूके के 80 प्रतिशत उपभोक्ताओं ने महामारी के बाद से मीडिया का उपभोग बढ़ा दिया है। आश्चर्यजनक रूप से, 68 प्रतिशत उपभोक्ता ऑनलाइन प्लेटफार्म पर सिर्फ और सिर्फ इस महामारी से जुड़ी नई–नई खबरों के तलाश में थे। इस अध्ययन की खास बात ये रही कि इसने प्राप्त आंकड़ों को अलग–अलग पीढ़ियों और उनके लिंग के आधार पर भी विश्लेषण किया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्शद्ेय भारत में कोरोना महामारी के दौरान संचार माध्यमों की उभरती हुई भूमिका का अध्ययन करना है।

शोध प्रश्न

1. लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए किन माध्यमों का लोग अधिक प्राथमिकता देते हैं?
2. क्या लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ा है?

3. व्हाट्सएप पर लोग कोविड–19 के बारे में आपस में अधिकांश किस तरह के संदेश साझा करते हैं?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध एक मात्रात्मक शोध है। शोध हेतु आकंड़े एकत्रित करने के लिए ऑनलाइन सर्वे तकनीक अपनाई गई।

न्यादर्श

यह ऑनलाइन सर्वेक्षण गूगल फॉर्म आधारित सेवा के द्वारा व्हाट्सएप समूह, फेसबुक, मैसेंजर और ई–मेल के माध्यम से छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर व गरियाबंद जिले के 20–20 चयनित प्रयोज्यों को प्रसारित किया गया। प्रयाज्यों का चयन यादृद्विच्छक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए किस माध्यम को लोग अधिक प्राथमिकता देते हैं?

तालिका कमांक – 1

लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर प्राप्त परिणामों को दर्शित करने वाली सारिणी

			विकल्प				कुल
			रेडियो	टेलीविज़न	सोशल मीडिया	समाचार पत्र	
जिला	रायपुर	आवृत्ति	3	15	2	0	20
		अपेक्षित आवृत्ति	1.5	7.5	8.5	2.5	20.0
		जिले में प्रतिशत	15.0%	75.0%	10.0%	0.0%	100.0%
		अनुकियाओं में प्रतिशत	100.0%	100.0%	11.8%	0.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	7.5%	37.5%	5.0%	0.0%	50.0%
	गरियाबंद	आवृत्ति	0	0	15	5	20
		अपेक्षित आवृत्ति	1.5	7.5	8.5	2.5	20.0
		जिले में प्रतिशत	0.0%	0.0%	75.0%	25.0%	100.0%
		अनुकियाओं में प्रतिशत	0.0%	0.0%	88.2%	100.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	0.0%	0.0%	37.5%	12.5%	50.0%

तालिका कमांक – 2

लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर प्राप्त काई वर्ग को दर्शित करने वाली सारिणी

	Value	df	Asymptotic Significance (2-sided)
Pearson Chi-Square	32.94[a]	3	.00
Likelihood Ratio	43.13	3	.00
Linear-by-Linear Association	25.74	1	.00
N of Valid Cases	40		

आरेख कमांक – 1

लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर प्राप्त परिणामों का आरेखीय प्रदर्शन

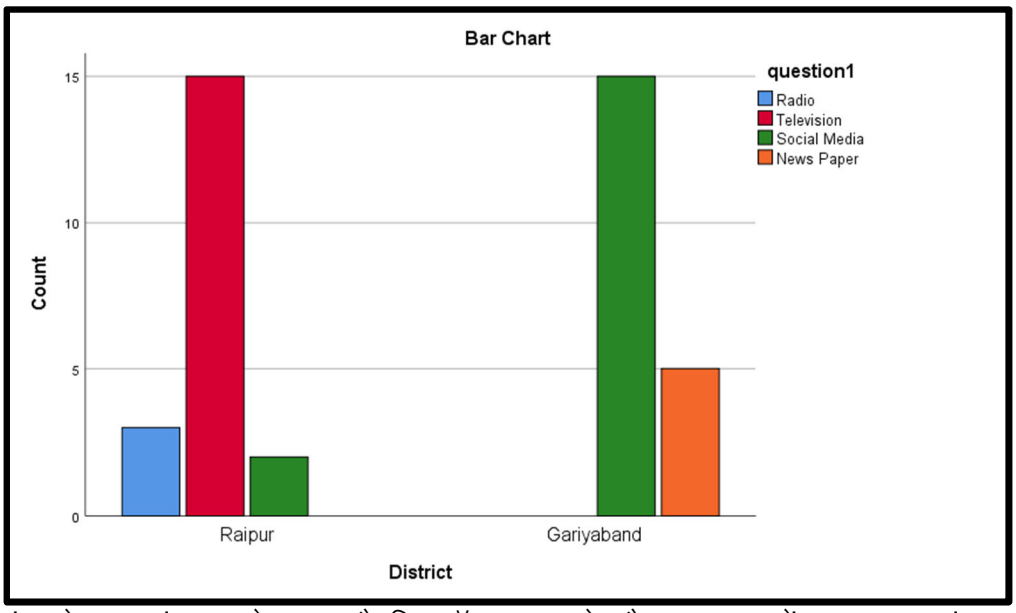

तालिका एवं आरेख क्रमांक–1 से स्पष्ट है कि लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर रायपुर जिले के न्यादर्शों से रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर आवृत्ति का मान क्रमशः 3, 15, 2 व 0 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अपेक्षित आवृत्ति का मान रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर क्रमशः 1.5, 7.5, 8.5 व 2.5 प्राप्त हुआ। रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 15.0%, 75.0%, 10.0% व 0.0% 0 प्राप्त हुआ। रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर अनुक्रियाओं में प्रतिशत का मान क्रमशः 100.0%, 100.0%, 11.8% व 0.0% प्राप्त हुआ।

गरियाबंद जिले के न्यादर्शों से रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर आवृत्ति का मान क्रमशः 0, 0, 15 व 5 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अपेक्षित आवृत्ति का मान रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर क्रमशः 1.5, 7.5, 8.5 व 2.5 प्राप्त हुआ। रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 0.0%, 0.0%, 75.0% व 25.0% प्राप्त हुआ। रेडियो, टेलीविज़न, सोशल मीडिया व समाचार पत्र के विकल्पों पर अनुक्रियाओं में प्रतिशत का मान क्रमशः 0.0%, 0.0%, 88.2% व 100.0% प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक–2 से स्पष्ट है कि लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 32.94 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

2. क्या लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ा है?

तालिका क्रमांक – 3

लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया के उपयोग को दर्शित करने वाली सारिणी

			विकल्प		कुल
			हॉ	नहीं	
जिला	रायपुर	आवृत्ति	20	0	20

		अपेक्षित आवृत्ति	19.0	1.0	20.0
		जिले में प्रतिशत	100.0%	0.0%	100.0%
		अनुक्रियाओं में प्रतिशत	52.6%	0.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	50.0%	0.0%	50.0%
	गरियाबंद	आवृत्ति	18	2	20
		अपेक्षित आवृत्ति	19.0	1.0	20.0
		जिले में प्रतिशत	90.0%	10.0%	100.0%
		अनुक्रियाओं में प्रतिशत	47.4%	100.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	45.0%	5.0%	50.0%

तालिका क्रमांक – 4

लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रश्न पर प्राप्त काई वर्ग को दर्शित करने वाली सारिणी

	Value	df	Asymptotic Significance (2-sided)
Pearson Chi-Square	2.10[a]	1	.14
Continuity Correction[b]	.52	1	.46
Likelihood Ratio	2.87	1	.09
Fisher's Exact Test			
Linear-by-Linear Association	2.05	1	.15
N of Valid Cases	40		

आरेख क्रमांक – 2

लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया के उपयोग का आरेखीय प्रदर्शन

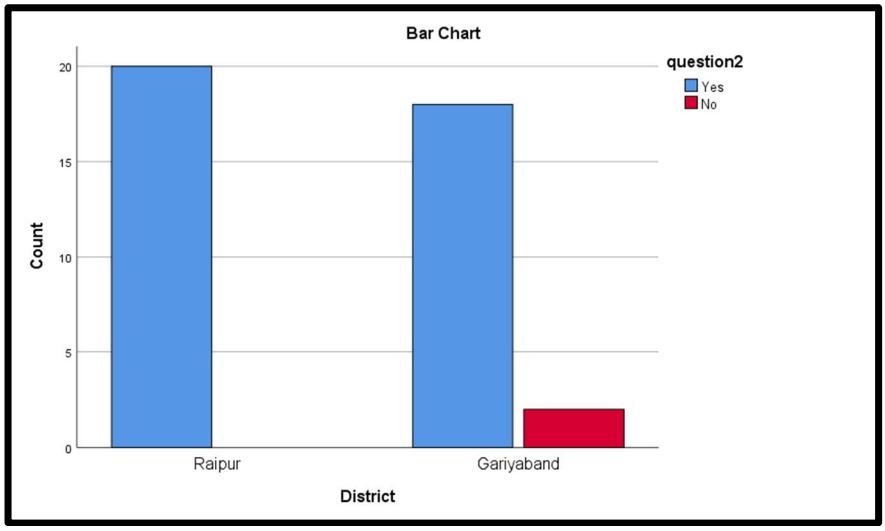

तालिका क्रमांक – 3 एवं आरेख क्रमांक–2 से स्पष्ट है कि लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रश्न पर रायपुर जिले के न्यादर्शों से हां व नहीं के विकल्पों पर आवृत्ति का मान क्रमशः 20 व 0 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अपेक्षित आवृत्ति का मान हां व नहीं के विकल्पों पर क्रमशः 19.0 व 1.0 प्राप्त हुआ। हां व नहीं विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 100.0% व 0.0 % प्राप्त हुआ। हां व नहीं के विकल्पों पर अनुक्रियाओं में प्रतिशत का मान क्रमशः 50.0% व 0.0% प्राप्त हुआ।

गरियाबंद जिले के न्यादर्शों से हां व नहीं के विकल्पों पर आवृत्ति का मान क्रमशः 18 व 2 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अपेक्षित आवृत्ति का मान हां व नहीं के विकल्पों पर क्रमशः 19.0 व 1.0 प्राप्त हुआ। हां व नहीं विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 90.0% व 1.0 % प्राप्त हुआ। हां व नहीं के विकल्पों पर अनुक्रियाओं में प्रतिशत का मान क्रमशः 47.4% व 100.0% प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक–2 से स्पष्ट है कि लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रश्न पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 2.10 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

3. व्हाट्सएप पर लोग कोविड–19 के बारे में आपस में अधिकांश किस तरह के संदेश साझा करते हैं?

तालिका क्रमांक – 5

व्हाट्सएप पर लोगों द्वारा कोविड–19 के बारे में आपस में साझा करने वाले संदेशों के प्रकार को दर्शित करने वाली सारिणी

			विकल्प				कुल
			उपचारात्मक	भ्रामक	मनोरंजक	अनावश्यक	
जिला	रायपुर	आवृत्ति	20	0	0	0	20
		अपेक्षित आवृत्ति	10.5	2.5	5.0	2.0	20.0
		जिले में प्रतिशत	100.0%	0.0%	0.0%	0.0%	100.0%
		अनुक्रियाओं में प्रतिशत	95.2%	0.0%	0.0%	0.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	50.0%	0.0%	0.0%	0.0%	50.0%
	गरियाबंद	आवृत्ति	1	5	10	4	20
		अपेक्षित आवृत्ति	10.5	2.5	5.0	2.0	20.0
		जिले में प्रतिशत	5.0%	25.0%	50.0%	20.0%	100.0%
		अनुक्रियाओं में प्रतिशत	4.8%	100.0%	100.0%	100.0%	50.0%
		कुल प्रतिशत	2.5%	12.5%	25.0%	10.0%	50.0%

तालिका क्रमांक – 6

व्हाट्सएप पर लोगों द्वारा कोविड–19 के बारे में आपस में साझा करने वाले संदेशों के प्रकार के प्रश्न पर प्राप्त काई वर्ग को दर्शित करने वाली सारिणी

	Value	df	Asymptotic Significance (2-sided)
Pearson Chi-Square	36.19[a]	3	.00
Likelihood Ratio	47.41	3	.00
Linear-by-Linear Association	28.53	1	.00
N of Valid Cases	40		

आरेख क्रमांक – 3

व्हाट्सएप पर लोगों द्वारा कोविड–19 के बारे में आपस में साझा करने वाले संदेशों के प्रकार का आरेखीय प्रदर्शन

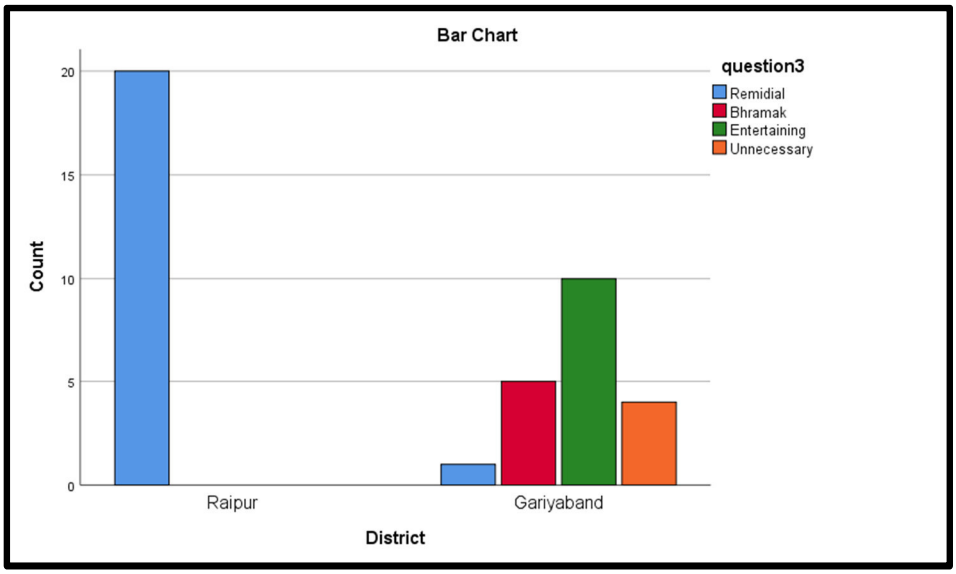

तालिका क्रमांक – 5 एवं आरेख क्रमांक–3 से स्पष्ट है कि व्हाट्सएप पर लोगों द्वारा कोविड–19 के बारे में आपस में साझा करने वाले संदेशों के प्रकार के कथन पर रायपुर जिले के न्यादर्शों से उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर आवृत्ति का मान क्रमशः 20, 0, 0 व 0 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अपेक्षित आवृत्ति का मान उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर क्रमशः 10.5, 2.5, 5. 0 व 2.0 प्राप्त हुआ। उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 100.0%, 0.0%, 0.0% व 0.0% प्राप्त हुआ। उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 95.2%, 0.0%, 0.0% व 0.0% प्राप्त हुआ।

गरियाबंद जिले के न्यादर्शों से उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर आवृत्ति का मान क्रमशः 20, 0, 0 व 0 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अपेक्षित आवृत्ति का मान उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर क्रमशः 10.5, 2.5, 5.0 व 2.0 प्राप्त हुआ। उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 100.0%, 0.0%, 0.0% व 0.0% प्राप्त हुआ। उपचारात्मक, भ्रामक, मनोरंजक व अनावश्यक के विकल्पों पर जिले में प्रतिशत का मान क्रमशः 95. 2%, 0.0%, 0.0% व 0.0% प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक–6 से स्पष्ट है कि लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 36.19 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

निष्कर्ष

परिणामों से स्पष्ट है कि लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 32.94 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया। लॉकडाउन के दौरान सामान्य दिनों की तुलना में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रश्न पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 2.10 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया। लॉकडाउन के दौरान सूचनाओं, समाचार एवं मनोरंजन के लिए लोगों द्वारा प्राथमिकता से प्रयुक्त माध्यम के कथन पर रायपुर एवं गरियाबंद जिले का परिकलित काई वर्ग मान 36.19 प्राप्त हुआ जोकि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Covid 19 lockdown indian users flock to&fb and whatsapp general news sites see numbersrise 8242811-html
- कुमार, एम. एवं द्विवेदी, एस. (2020). इंपेक्ट ऑफ कोरोनावायरस इंपोज्ड लॉकडाउन ऑन इंडियन पोपूलेशन एडं देयर हैबिट्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइस एंड हेल्थकेयर रिसर्च, 5(2), 88–97
- ऑक्सफोर्ड लर्नर्स डिक्शनरी (2020). ehe- https://www-oxfordlearnersdictionaries-com/definition/english/meme?q=meme
- टाइम्स ऑफ इंडिया. (2020, फरवरी 13). व्हाट्सएप यूजर्स बेस हिट्स 2 बिलियन मार्क. https://timesofindia-indiatimes-com/business/india&business/whatsapps&user&base&hits&2bn&mark/articleshow/74108379-cms
- विमर, आर. डी. एवं डॉमिनिक, जे. आर. (2017). मास मीडिया रिसर्चः एन इंट्रोडक्शन. लंदनः सीनेज लर्निंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड.
- विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2020, मार्च 18). मैंटल हैल्थ एडं साइकॉलोजिकल कंसिडरेश्नस ड्यूरिंग द कोविड–19 आउटब्रेक.https://www-who-int/docs/default&source/coronaviruse/mental&health&considerations-pdf\sfvrsn¾6d3578af_2
- वैन–इंफ्रा रिपोर्ट. (2020, मार्च 2). कोविड–19ः इंडयिन पब्लिशर्स प्रमोट सेफ्टी ऑफ प्रिंट न्यूज़े पेपर्स. https://wan&ifra-org/2020/04/covid&19&indian&publishers&promote&safety&of&print&newspapers/

उदगीर तालुक्याच्या विकासात कौशल्य विकास कार्यक्रमाचे योगदान, एक चिकित्सक अभ्यास

संशोधक
शितल नरसिंग पुरी,
संशोधक विद्यार्थिनी, स्वामी रामानंद तीर्थ
मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

मार्गदर्शक
प्रो. डॉ. एम.डी. कच्छवे,
रमेश वरपुडकर महाविदयालय,
सोनपेठ, जि. परभणी.

गोषवारा :-

२०१५ च्या एका व्यावसायिक अहवालानुसार, भारतात २०२२ पर्यंत ५०० दशलक्ष लोकांची कुशल कामगार संख्या असून ही संख्या वाढवण्यासाठी देशाच्या विविध भागात कौशल्य विकासाचे विविध उपक्रम राबवले जातात. हा अभ्यास "उदगीर तालुक्याच्या विकासात कौशल्य विकास कार्यक्रमाचे योगदान, एक चिकित्सक अभ्यास" या विषयावर करण्यात आला आहे.

परिचय :-

उदगीर तालुक्याच्या आर्थिक विकासासाठी कौशल्य विकास आवश्यक असून अर्थव्यवस्था वाढीसाठी चांगले उत्पादन, तृतीय क्षेत्राची निरोगी वाढ गरजेची आहे. कौशल्य एखाद्या व्यक्तीच्या कार्य पूर्ण करण्याच्या क्षमतेशी संबंधित असून कौशल्य व ज्ञान ही प्रत्येक देशाच्या आर्थिक व सामाजिक विकासाची इंजिन असून अधिक प्रभावीपणे प्रतिसाद देतात. उदगीर तालुक्याच्या कौशल्य विकास कार्यक्रम राबवताना अनेक अडथळे निर्माण होतात यावरती सरकारने लक्ष केंद्रित करणे आवश्यक असून त्याचे निराकरण करण्यासाठी कौशल्य विकास कार्यक्रमात सुधारणा करणे आवश्यक आहे. भारतातील ६२% लोकसंख्या ३५ वर्षापेक्षा कमी वयाची आहे. लातूर जिल्ह्यात उच्च बेरोजगारी, अप्रशिक्षित व अनुत्पादक लोकसंख्या असल्यामुळे यांना कौशल्य विकास प्रशिक्षण देणे गरजेचे आहे. उदगीर तालुक्याच्या अनेक प्रकारचे कुटिरोद्योग व वंश परंपरागत व्यवसाय यातून प्रचंड कौशल्य असल्याचे निदर्शनास आले आहे. कुशल कामगारांच्या औद्योगिक मागणीतील अंतर व त्यांच्यातील उपलब्ध शक्ती ओळखणे व कौशल्य विकास प्रशिक्षण देणे हे सरकारचे लक्ष असून ते गाठण्यात अनेक प्रकारच्या आव्हांना सामोरे जावे लागते. संशोधकाने असे सुचवले आहे की, उदगीर तालुक्याच्या कौशल्य विकास कार्यक्रमात वाढ करण्याची गरज आहे.

संशोधनाचे उद्दिष्टे :-

१) उदगीर तालुक्यात कौशल्य विकास कार्यक्रमाची आवश्यकता जाणून घेणे.
२) उदगीर तालुक्यातील कौशल्य विकास संबंधित योजनाचा अभ्यास करणे.
३) लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्यात कौशल्य विकास कार्यक्रमाच्या माध्यमातून प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजनेचा रोजगार व स्वयंरोजगारावर होणाऱ्या परिणामांचा आढावा घेणे.

संशोधनाची गृहीतके :-

१) लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्यात कौशल्य विकास कार्यक्रमाची आवश्यकता आहे.

२) उदगीर तालुक्यातील कौशल्य विकास संबंधित योजनामुळे लातूर जिल्ह्यातील युवकांचा विकास झाला आहे.

३) लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्याच्या कौशल्य विकास कार्यक्रमाच्या माध्यमातून प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजनेचा रोजगार व स्वयंरोजगारावर होणाऱ्या परिणाम हा अनुकूल आहे.

संशोधन विषयाचे महत्त्व :-

आजच्या देशाची भूमिका ही कल्याणकारी देश असल्यामुळे युवकांच्या विविध कल्याणासाठी जनकल्याणकारी कार्य पार पाडण्यासाठी शासन, प्रशासन याबरोबरच प्रशिक्षण संस्था देखील महत्त्वाच्या आहेत. शासन प्रशासनापेक्षा प्रशिक्षण संस्था ह्या जास्तीत जास्त युवकांना प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजनेंतर्गत रोजगार व स्वयंरोजगारावर प्रशिक्षण, मार्गदर्शन देण्यासाठी हातभार लावतात. समाजाच्या सर्वांगीण विकासाचे, कल्याणाचे कार्य पार पाडण्यासाठी सरकारने राबवलेल्या कौशल्य विकास योजना ह्या कुशल मनुष्यबळ निर्माण करण्याची महत्त्वाची भूमिका अतिशय यशस्वीपणे पार पडतात. म्हणून या कौशल्य विकास योजनांचे महत्त्व अलीकडच्या काळात मोठया प्रमाणात वाढलेले आपल्याला दिसून येते.

संशोधनाची व्याप्ती :-

या संशोधन विषयाची व्याप्ती ही उदगीर तालुक्याच्या विकासात कौशल्य विकास कार्यक्रमाचे योगदान इतकीच मर्यादित आहे.

संशोधन पद्धती :-

प्रस्तुत संशोधन हे दुय्यम स्त्रोतांवर आधारित असून माहिती संकलनासाठी वेगवेगळ्या ऑनलाईन बातम्या, वेबसाईट, अहवाल व संदर्भ पुस्तकांचा वापर केला आहे.

उदगीर तालुक्यात कौशल्य विकास कार्यक्रमाची आवश्यकता

एखाद्या व्यक्तीच्या प्रगतीसाठी त्याच्या जीवनाच्या प्रवासात स्वतःशी जुळवून घेण्याची क्षमता त्याच्यात असणे आवश्यक आहे. सध्याच्या काळातील युवकांनी त्याच्या आजूबाजूला असलेल्या वेगाने बदलणाऱ्या वातावरणाला सामोरे जाण्यासाठी आपली कौशल्य संभाव्यतेकडे प्रक्षेपित करणे आवश्यक आहे. युवकांना रोजगार व स्वयंरोजगारात प्रगती करण्यासाठी जीवन कौशल्याची वाढ ही फायदेशीर ठरली आहे. कौशल्य असलेला उमेदवार आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टीचा, गतिशील, प्रेरक आणि आर्थिक शक्तिशाली बनून कोणत्याही देशाची आर्थिक व सामाजिक प्रगती करण्यास सक्षम असतो. कोणत्याही देशाची उत्क्रांती आणि सामाजिक प्रगती करण्यासाठी

अत्याधुनिक शैक्षणिक पातळीसह कौशल्य व क्षमतांनी सुधारित शैक्षणिक धोरण ठरवण्याची आवश्यकता आहे.

लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्यात कौशल्य विकासा संबंधित योजना :-

१) प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना :-

प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना ही १५ जुलै २०१५ ला सुरु झाली असून या योजनेंतर्गत दहावी, बारावी नंतर किंव्हा आधी अर्ध्यात शिक्षण सोडलेल्या अकुशल कामगारांना प्रशिक्षण दिले जाते. यामध्ये प्रशिक्षणा सोबतच मार्गदर्शन, प्लेसमेंट सेल व स्वयंरोजगारासाठी (उद्योग उभारणीसाठी) वित्त पुरवठा केला जातो.

२) दिन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना :-

या योजनेचे मुख्य उद्दिष्ट ग्रामीण भागातील गरीब युवकांना प्रशिक्षण, नोकरीची संधी व मार्गदर्शन तसेच व्यवसायासाठी कर्ज देणे हे आहे.

उदगीर तालुक्यात कौशल्य विकास कार्यक्रमाच्या माध्यमातून प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजनेचा रोजगार व स्वयंरोजगारावर होणारा परिणाम :-

लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्याच्या कौशल्य विकास कार्यक्रमांतर्गत रोजगार व स्वयंरोजगारावर प्रशिक्षणासोबतच मार्गदर्शन मेळावे आयोजित केले जातात. केंद्र व राज्य सरकारचा रोजगार व स्वयंरोजगार निर्मिती आणि कुशल कामगार उद्योजकता पदोन्नती महत्त्वपूर्ण ठरते. सध्य परिस्थितीत फक्त रोजगार निर्माण करून चालत नाही तर रोजगार निर्माण करणारे हात तयार करणे आवश्यक आहे. ही योजना फक्त कुशल कामगारच बनवत नाही तर उद्योजक निर्माण करते. उद्योजक हे फक्त आर्थिक विकासास हातभार लावत नाहीत तर ते दुसऱ्याला उत्पन्न व रोजगाराचे स्त्रोत देतात. सारणी क्र. १ मध्ये रोजगार व स्वयंरोजगार प्राप्त उमेदवार दर्शविण्यात आले आहे.

सारणी क्र. १

कौशल्य विकास योजनेंतर्गत रोजगार व स्वयंरोजगार प्राप्त उमेदवार

अ.क्र.	कौशल्य विकास योजनेंतर्गत रोजगार व स्वयंरोजगार प्राप्त उमेदवार	संदर्भ वर्ष (२०१५-२०२०)				
		२०१५-२०१६	२०१६-२०१७	२०१७-२०१८	२०१८-२०१९	२०१९-२०२०
अ)	रोजगार प्राप्त उमेदवार	-	-	-	४१	१२१
ब)	स्वयंरोजगार प्राप्त उमद□ार	-	-	-	३	४
क)	एकूण	-	-	-	४४	१२५

स्त्रोत – सहायक संचालक, जिल्हा कौशल्य विकास, रोजगार व उद्योजकता मार्गदर्शन केंद्र, लातूर.

सारणी क्र. १ वरुन असे दिसून येते की, भारतात १५ जुलै २०१५ पासुन प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना जरी सुरु झाली असली तरी लातूर जिल्ह्यात मात्र ही योजना सुरु होण्यास वेळ लागला. ही योजना लातूर जिल्ह्यात उशिरा सुरु होऊनही कौशल्य विकास कार्यक्रमाच्या माध्यमातून प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजनेचा रोजगार व स्वयंरोजगारावर होणारा परिणाम हा अनुकूल आहे. प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजनेंतर्गत लातूर जिल्ह्यातून १२५ उमेदवारांना रोजगार प्राप्त झाला असून ४४ उमेदवारांनी स्वयंरोजगार सुरु केलेले आहे.

निष्कर्ष :-

१) प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना अत्यंत प्रभावी योजना ठरली आहे.

२) लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्यात कौशल्य विकास कार्यक्रमांतर्गत रोजगार व स्वयंरोजगारामुळे अनेक बेकार युवकांना रोजगाराची संधी प्राप्त झाली आहे.

३) प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना व दिन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना ह्या लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्यात ऐतिहासिक योजना आहेत.

समारोप :-

सध्याच्या जागतिकीकरणाच्या युगात रोजगार व स्वयंरोजगार मिळवण्यासाठी प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजनेला खुप महत्त्व प्राप्त झाले आहे. लातूर जिल्ह्यातील उदगीर तालुक्यात प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना अभियान प्रभावीपणे राबविण्यात आले असून कौशल्य विकास व औपचारी शिक्षण यांचा एकत्रित विचार करून ही योजना उदगीर तालुक्यात यशस्वी पणे राबवली जात आहे. प्रधानमंत्री कौशल्य विकास योजना यशस्वी करण्यासाठी प्रशिक्षकांना योग्य प्रशिक्षण देणे ही कौशल्य विकासाची गुरु किल्ली आहे.

संदर्भ

१)http://www.businessstandard.com/article/economypolicy/india-targets-500.

२) https://www.msde.gov.in/assets/images/skill

३) http://vikaspedia.in/social-welfare/skill

४) लातूर जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन, लातूर जिल्हा सांख्यिकी कार्यालय, अर्थ व सामाजिक संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, लातूर २०१९-२०२०.

५) सहायक संचालक, जिल्हा कौशल्य विकास, रोजगार व उद्योजकता मार्गदर्शन केंद्र, लातूर.